SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिकाः 2008 से अब तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनाली कुमारी, शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग
मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार, भारत
सत्यादित्य सिंह, पीएच–डी, राजनीति विज्ञान
जे.एम.एस. कॉलेज, मुंगेर, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
मनाली कुमारी, शोधार्थी
सत्यादित्य सिंह, पीएच–डी
E-mail : sharmamanali353@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/02/2026
Revised on : 24/04/2026
Accepted on : 03/05/2026
Overall Similarity : 00% on 25/04/2026

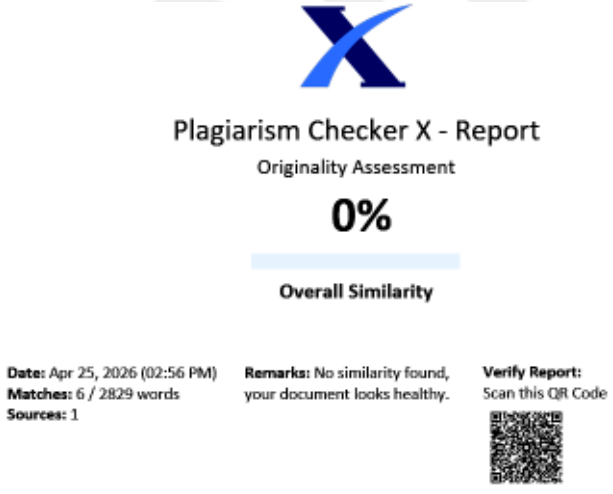

शोध सार

यह अध्ययन 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका का विश्लेषण करता है। शीत युद्ध के पश्चात स्थापित एकध्रुवीय व्यवस्था में अमेरिका का प्रभुत्व रहा, किंतु 2008 के बाद वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन हुआ और उभरती व्यवस्थाओं विशेष रूप से भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। यह शोध भारत की विदेश नीति में आए परिवर्तनों जैसे– रणनीतिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण का परीक्षण करता है। साथ ही G20, BRICS, QUAD और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक संस्थानों में भारत की सक्रिय भागीदारी का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है, कि आर्थिक कूटनीति, सामरिक क्षमता और सॉफ्ट पावर उसे वैश्विक स्तर पर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में स्थापित कर रही है। हालांकि चीन के साथ प्रतिस्पर्धा, वैश्विक संस्थानों में सीमित प्रतिनिधित्व और आंतरिक आर्थिक चुनौतियां इसके सामने प्रमुख बाधा हैं। अतः बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत एक उभरती हुई और संतुलनकारी शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है तथा भविष्य में वैश्विक व्यवस्था को आकार देने की क्षमता रखता है।

मुख्य शब्द

बहुध्रुवीय व्यवस्था, भारत की विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता, बहु–संरेखण, सॉफ्ट पावर, आर्थिक कूटनीति.

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शीत युद्ध के समाप्त होने के पश्चात एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना हुई, जिसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका ने किया है (Ikenberry, 2011)[1]। लेकिन इस व्यवस्था की स्थिरता को 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट ने कड़ी चुनौती दी, और वैश्विक शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रारंभ हुए। भारत, चीन, ब्राजील और रूस जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने इस संकट में वैश्विक राजनीति

एवं अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को मजबूत बनाया, जिसके परिणामस्वरुप बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की शुरुआत हुई (Zakaria, 2008)[2]। बहुध्रुवीयता से आशय है, एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था जिसमें एक से अधिक प्रमुख राष्ट्रों के बीच शक्तियों का वितरण होता है। वर्तमान समय में वैश्विक शक्ति संरचना को अमेरिका, चीन, यूरोपीय संघ, रूस और भारत जैसे देश प्रभावित कर रहे हैं (Haass, 2008)[3]। इस बदलते वैश्विक संरचना में भारत एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरा है, जिसने न केवल आर्थिक विकास के क्षेत्र में विशेष प्रगति की है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों जैसे कूटनीतिक, सामरिक और वैश्विक शासन संस्थानों में भी अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है।

इसके अतिरिक्त भारत ने QUAD, BRICS, G20 तथा संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाते हुए वैश्विक मुद्दों जैसे सुरक्षा, आर्थिक विकास और जलवायु परिवर्तन में अहम योगदान दिया है (Jaishankar, 2020)[4]।

इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के इस युग में भारत की भूमिका का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, जो यह दर्शाता है, कि भारत एक जिम्मेदार और प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

साहित्य समीक्षा

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और उसमें भारत की भूमिका पर विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं:

G. John Ikenberry के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में शीत युद्ध के पश्चात अमेरिका का दबदबा स्थापित हो गया था, पर समय के साथ उसमें कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए जिससे इस व्यवस्था में कई संरचनात्मक परिवर्तन देखने को मिला।

Fareed Zakaria का विचार उनसे अलग है, उनका तर्क है कि विश्व "Post American world" की और बढ़ रहा है, जहां कई नई उभरती शक्तियों के बीच शक्ति का वितरण देखने को मिल रहा है।

Richard N. Haass "अध्रुवीयता" (Non-polarity) की धारणा प्रस्तुत करते हैं, जिसमें एक से अधिक राष्ट्र वैश्विक शक्ति संरचना को प्रभावित करते हैं।

भारत की भूमिका को लेकर भी विद्वानों के बीच विभिन्न मत है। **S. Jaishankar** के अनुसार, भारत सामरिक स्वायत्तता (Strategic autonomy) के माध्यम से बहुध्रुवीय व्यवस्था में संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है।

Arvind Subramanian का मानना है, कि 2008 के बाद वैश्विक आर्थिक शक्ति का केंद्र एशिया बन चुका है, जिससे भारत के विकास में नई संभावनाओं का उदय हुआ है (Subramanian, 2011)[5]।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है, कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका बहुआयामी, गतिशील और निरंतर विकसित हो रही है।

शोध उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य 2008 के बाद उभरती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह शोध निम्नलिखित उद्देश्यों पर केंद्रित है:

- अंतर्राष्ट्रीय शक्ति व्यवस्था में 2008 के वैश्विक संकट के आने के बाद हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना तथा भविष्य में भारत की भूमिका का आकलन करना।
- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का भारत की बदलती विदेश नीति पर क्या प्रभाव पड़ा इसका विश्लेषण करना और भारत के समक्ष आने वाली चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना।
- G20, BRICS और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक संस्थाओं में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- वैश्विक व्यवस्था में भारत की उभरती कूटनीतिक, सामरिक और आर्थिक क्षमताओं का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें पुस्तकों, शोधलेखों, सरकारी रिपोर्टों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रकाशनों का समावेश है। गुणात्मक शोध के माध्यम से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा तथा उसमें भारत की भूमिका का गहन विश्लेषण किया गया है (Creswell, 2014)[6]।

इस अध्ययन में ऐतिहासिक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत 2008 के वैश्विक वित्तीय

संकट के बाद अंतरराष्ट्रीय शक्ति संरचना में हुए परिवर्तनों का क्रमिक विश्लेषण किया गया है।

सैद्धांतिक ढांचा

इस अध्ययन में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था मैं भारत की भूमिका को समझने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सिद्धांतों जैसे–यथार्थवाद, उदारवाद तथा संरचनावाद का उपयोग किया गया है।

यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति शक्ति और राष्ट्रीय हितों पर आधारित होती है, इस संदर्भ में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को विभिन्न शक्तिशाली राज्यों के बीच शक्ति संतुलन के रूप में देखा जाता है (Mearsheimer, 2001)[7]।

उदारवादी सिद्धांत भारत की G20, BRICS तथा संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय संस्थानों में सक्रिय भागीदारी, वैश्विक सहयोग और सामूहिक निर्णय निर्माण की प्रवृत्ति में दिखाई देती है (Keohane - Nye, 2012)[8]।

भारत की सॉफ्ट पावर जैसे–संस्कृति, लोकतंत्र और कूटनीतिक मूल्यों को उसकी वैश्विक भूमिका को आकार देने वाले महत्वपूर्ण तत्वों में संरचनावादी दृष्टिकोण देखा जा सकता है (Wendt, 1999)[9]।

2008 के बाद वैश्विक व्यवस्था में परिवर्तन

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में 2008 का वैश्विक वित्तीय संकट एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसने वैश्विक शक्ति संतुलन को गहराई से प्रभावित किया। इस संकट के परिणामस्वरूप पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं जैसे– अमेरिका और यूरोप की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई, जबकि उभरती अर्थव्यवस्थाओं जैसे– भारत और चीन ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया। इस परिवर्तन ने वैश्विक शक्ति को पुनर्परिभाषित करने का कार्य किया।

कई विद्वानों का मानना है कि 2008 के बाद विश्व व्यवस्था एकध्रुवीयता से बहुध्रुवीय की ओर बढ़ा है। Fareed Zakaria के अनुसार, विश्व "Post-American world" की दिशा में बढ़ रहा है, जहां अमेरिका का प्रभुत्व कम होता जा रहा है, और अन्य शक्तियाँ उभर रही है।

इसके अतिरिक्त Amitav Acharya us "Multiplex world" की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा, कि वैश्विक व्यवस्था जटिल और बहुस्तरीय हो गई है, जहां विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियां समकक्ष रूप से कार्य कर रही है (Acharya, 2017)[10]।

अतः 2008 के बाद वैश्विक व्यवस्था में हुए परिवर्तन ने न केवल शक्ति संरचना को पुनर्परिभाषित किया है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के स्वरूप को भी अधिक जटिल और बहुआयामी बना दिया है, जिसमें भारत जैसी उभरती शक्तियों के लिए एक नई संभावना उत्पन्न हुई है।

भारत की विदेश नीति का विकास (2008–वर्तमान)

भारत की विदेश नीति में 2008 के बाद से महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है, जिसके अंतर्गत वह विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने का प्रयास करता है (Pant, 2019)[11]।

इस संदर्भ में Subrahmanyam Jaishankar के अनुसार, भारत की विदेश नीति अब "Multi-alignment" की दिशा में विकसित हो रही है, जहां भारत एक साथ अमेरिका, रूस, यूरोप और अन्य शक्तियों के साथ सहयोग बनाए रखता है।

यह भारत के बढ़ते सामरिक और आर्थिक महत्व को दिखाता है। इसके अलावा भारत ने "Look East Policy" को आगे बढ़ाते हुए "Act East Policy" को अपनाया, जो उसे दक्षिण पूर्व एशिया और इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में अपनी मजबूत स्थिति को बनाने में मदद कर सकता है (Scott, 2021)[12]।

साथ ही "Neighbourhood First Policy" के द्वारा भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध बनाने की कोशिश कर रहा है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को बढ़ाया जा सके (Mohan, 2015)[13]।

भारत अब वैश्विक संस्थानों जैसे–G20, BRICS तथा QUAD इत्यादि मैं अपनी भागीदारी बढ़ा रहा है, जो उसके विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों जैसे –जलवायु परिवर्तन, सुरक्षा और आर्थिक विकास पर अपनी बात मजबूती से रखता है (Tellis, 2016)[14]।

अतः 2008 के बाद भारत की विदेश नीति बदलती बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अधिक लचीली, व्यावहारिक और

बहुआयामी हो गई है, जो उसकी नई उभरती भूमिका को दर्शाता है।

वैश्विक संस्थानों में भारत की भूमिका

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के इस दौर में भारत विभिन्न वैश्विक संस्थाओं के साथ लगातार अपनी भूमिका बढ़ा रहा है, जो वैश्विक स्तर पर उसके महत्व को बढ़ाता है, इसका एक प्रमुख उदाहरण भारत के द्वारा 2022 में G-20 की अध्यक्षता किया जाना शामिल है (MEA, 2023)[15]।

इसी प्रकार, BRICS उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं का एक मंच है, जिसे पश्चिमी प्रभुत्व वाले वैश्विक ढांचे के विकल्प के रूप में देखा जाता है, जहां भारत संतुलनकारी भूमिका में है (Armijo, 2007)[16]।

संयुक्त राष्ट्र में भारत लगातार सुरक्षा परिषद में स्थाई सदस्यता की मांग कर रहा है, उसके अनुसार UNSC में सुधार आवश्यक है, ताकि विकासशील देशों का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके (Thakur, 2017)[17]।

इसके अतिरिक्त QUAD जैसे मंचों के माध्यम से भारत इंडो पेसिफिक क्षेत्र में सामरिक संतुलन और समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा दे रहा है (Smith, 2021)[18]।

अतः वैश्विक संस्थानों में भारत की बढ़ती भागीदारी यह स्पष्ट करती है, कि वह बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक जिम्मेदार, सक्रिय और प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर रहा है।

सामरिक एवं सुरक्षा आयाम तथा स्वास्थ्य सुरक्षा

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका केवल कूटनीतिक और आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं सुरक्षा आयामों में भी इसका महत्व लगातार बढ़ रहा है। इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में QUAD जैसे मंचों के माध्यम से भारत समुद्र सुरक्षा, मुक्त नौवहन और क्षेत्रीय संतुलन को बढ़ावा दे रहा है (MEA, 2021)[19]।

भारत की रक्षा नीति भी इस अवधि में अधिक व्यावहारिक और संतुलनकारी रही है, जहां उसने अमेरिका, रूस और अन्य देशों के साथ रक्षा सहयोग बनाए रखा है,जिसके माध्यम से भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करता है।

इसके अतिरिक्त कॉविड–19 महामारी के बाद "स्वास्थ्य सुरक्षा" (Health security) वैश्विक सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है। इस संदर्भ में भारत ने "vaccine maitri" पहल के तहत अनेक देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराकर वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग को बढ़ावा दिया, जिससे उसकी सॉफ्ट पावर और अंतर्राष्ट्रीय छवि मजबूत हुई।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी यह दर्शाती है, कि वह स्वास्थ्य क्षेत्र में भी वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने की क्षमता रखता है (WHO, 2022)[20]।

इस प्रकार पारंपरिक सैन्य सुरक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य सुरक्षा के क्षेत्र में भारत की भूमिका बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में इसकी व्यापक और बहुआयामी उपस्थिति को दर्शाती है।

आर्थिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका को समझने के लिए आर्थिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर दोनों महत्वपूर्ण आयाम है। 2008 के बाद भारत ने अपनी आर्थिक नीति को वैश्विक स्तर पर अधिक सक्रिय और प्रभावशाली बनाया है, जिससे वह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, निवेश और विकास सहयोग में एक महत्वपूर्ण भागीदार बनकर उभरा है।

भारत की आर्थिक कूटनीति का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक बाजारों में अपनी भागीदारी को बढ़ाना, विदेशी निवेश आकर्षित करना और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं (Global Supply Chains) में अपनी स्थिति को मजबूत करना है।

इस संदर्भ में "Make in India" और "Digital India" जैसी पहलें भारत की वैश्विक आर्थिक छवि को सुदृढ़ करती हैं। साथ ही, भारत दक्षिण–दक्षिण सहयोग (South -South Cooperation) के माध्यम से विकासशील देशों के साथ आर्थिक और तकनीकी साझेदारी को बढ़ावा दे रहा है, जो उसे वैश्विक दक्षिण का एक प्रमुख प्रतिनिधि बनाता है (Chaturvedi, 2016)[21]।

दूसरी ओर, सॉफ्ट पावर के क्षेत्र में भी भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, Joseph S. Nye Jr. के अनुसार, सॉफ्ट पावर किसी देश की सांस्कृतिक, वैचारिक और कूटनीतिक आकर्षण शक्ति पर आधारित होती है। इस दृष्टिकोण से भारत ने योग, आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी सकारात्मक छवि स्थापित की है।

इसके अतिरिक्त भारतीय प्रवासी समुदाय (Diaspora) भी भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो विभिन्न देशों में आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करता है (Saran, 2019)[22]।

अतः आर्थिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर के समन्वय के माध्यम से भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक प्रभावशाली और आकर्षक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

चुनौतियां एवं अवसर

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका के विस्तार के साथ–साथ उसके सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियां भी उपस्थित हैं। सबसे प्रमुख चुनौती चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और सीमा विवाद है, जो क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करता है।

इसके अतिरिक्त वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन के बावजूद भारत को अभी भी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थाई सदस्यता प्राप्त नहीं हो सका है, जो उसके वैश्विक प्रभाव को सीमित करती है।

आर्थिक क्षेत्र में भी भारत को बुनियादी ढांचे की कमी, बेरोजगारी और असमानता जैसी आंतरिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो उसकी वैश्विक प्रतिस्पर्धा को प्रभावित कर सकती है (World Bank, 2023)[23]। साथ ही बदलते भू राजनीतिक परिदृश्य में अमेरिका, रूस और चीन के बीच संतुलन बनाए रखना भारत के लिए एक जटिल कार्य है।

हालांकि इन चुनौतियों के बीच भारत के सामने अनेक अवसर भी उपलब्ध है। भारत की युवा जनसंख्या, तेजी से विकसित होती डिजिटल अर्थव्यवस्था और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में बढ़ती भागीदारी उसे एक महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति बना सकती है।

इसके अतिरिक्त इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति उसे वैश्विक सुरक्षा ढांचे में एक प्रमुख भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करती है।

अतः यह स्पष्ट है, कि चुनौतियों और अवसर के इस संतुलन के बीच भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपनी भूमिका को बेहतर करने की दिशा में अग्रसर है।

निष्कर्ष

अंतर्राष्ट्रीय विश्व व्यवस्था में 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के पश्चात महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं, जिसके परिणाम स्वरुप विश्व एकध्रुवीयता से बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर हुआ है। परिवर्तन के इस दौर में भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में उभरा है, तथा उसने अपनी विदेश नीति, आर्थिक कूटनीति और सामरिक नीतियों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत की है। G20, BRICS, QUAD और संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी ने भारत को वैश्विक शासन में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में स्थापित किया है, साथ ही उसकी रणनीतिक स्वायत्तता और बहु–संरेखण की नीति ने उसे विभिन्न शक्तियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने में सक्षम बनाया है, हालांकि भारत के सामने चीन के साथ प्रतिस्पर्धा, सीमित संसाधन और वैश्विक संसाधनों में प्रतिनिधित्व जैसी चुनौतियां मौजूद है, फिर भी उसकी आर्थिक प्रगति, युवा जनसंख्या और बढ़ती कूटनीतिक सक्रियता उसे भविष्य में एक प्रमुख वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर करती है, यह कहा जा सकता है, कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत न केवल एक महत्वपूर्ण अभिनेता है, बल्कि वह इस व्यवस्था के स्वरूप को आकार देने में भी निर्णायक भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

सुझाव

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं:

- बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के इस दौर में भारत को अपनी स्वतंत्र नीति निर्माण को बनाए रखते हुए प्रमुख वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित और व्यावहारिक संबंधों को और मजबूत करना चाहिए।
- UNSC में स्थाई सदस्यता को प्राप्त करने के लिए भारत को कूटनीतिक प्रयासों को बढ़ाना चाहिए, जिससे वैश्विक शासन में उसका प्रतिनिधित्व बढ़ सके।
- इसके साथ ही अन्य क्षेत्रों जैसे– आर्थिक क्षेत्र में भारत को बुनियादी ढांचे, औद्योगिक विकास और डिजिटल अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

- इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहिए और रक्षा क्षमताओं का आधुनिकीकरण करना चाहिए।
- भारत को अपनी सॉफ्ट पावर जैसे– संस्कृति, लोकतंत्र और प्रवासी भारतीयों का प्रभावी उपयोग करते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी सकारात्मक छवि को और सुदृढ़ करना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Ikenberry, G. J. (2011) *Liberal Leviathan:The Origin Crisis and Transformation of the American World Order.* Princeton University Press. Princeton, NJ, p. 56-78.
2. Zakaria, F. (2008) *The Post-American World.* W.W.Norton & Company, NewYork, p. 3-25.
3. Haass, R. N. (2008) The Age of Non-polarity. *Foreign Affairs,* 87 (3), 44-56.
4. Jaishankar, S. (2020) *The India Way: Strategies for an Uncertain World.* HarperCollins India, New Delhi, p. 55-79.
5. Subramanian, A. (2011) *Eclipses: Living in the Shadow of China's Economic Diminances.* Peterson Institute for International Economics, Washington, DC, p. 66-88.
6. Creswell, J. W. (2014) *Research Design: Qualitative, Quantitative and Mixed Methods Approaches* (4thed.) Sage publications, Thousand Oaks, CA, p. 3-25.
7. Mearsheimer, J.J. (2001) *The Tragedy of Great Power Politics.* W.W.Norton & Company, New York, p. 29-54.
8. Keohane, R.O. & Nye, J.S. (2012) *Power and Interdependence.* (4thed.) Pearson, Boston, p. 45-67.
9. Wendt, A. (1999) *Social Theory of International Politics.*Cambridge University Press, Cambridge, p. 92-115.
10. Acharya, A. (2017) *The End of American World Order.* Polity Press, Cambridge, p.12&39.
11. Pant, H.V. (2019) *Indian Foreign Policy:An Overview.* Oxford University press, New Delhi, p. 80-102.
12. Scott, D. (2012) India and the Indo-Pacific. *International Journal,* 67 (1), 165-183. DOI : https://doi.org/10.1177/002070201206700109
13. Mohan, C.R. (2015) *Modi's World: Expanding India's Sphere of Influence.* HarperCollins India, New Delhi, p. 21-45.
14. Tellis, A.J. (2016) India's Emerging Power. Carnegie Endowment for International Peace, Washington, DC, p. 101-125.
15. Ministry of External Affairs, India (2023) India's G20 Presidency Documents. Government of India, New Delhi.
16. Armijo, L.E. (2007) The BRICS Countries as Analytical Category. *Asian Perspective,* 31 (4), 7-42.
17. Thakur, R. (2017) The United Nations Peace and Security:From Collective Security to Responsibility to Project (2nd ed.) Cambridge University Press, Cambridge, p. 120-142.
18. Smith, J. (2021) The QUAD and the Indo-Pacific:Strategic Cooperation and Regional Security. *Journal of Indo-Pacific Affairs,* 4 (3), p. 45-60.
19. Ministry of External Affairs (2021) Vaccine Maitri Initiative Documents. Government of India. New Delhi, https://MEA.gov.in, Accessed on 20/02/2026.
20. World Health Organisation (2022) World Health Statistics 2022: Monitoring Health for the SDGs.Geneva: World Health Organisation. https://www.who.int/data/gho/public/world-health-statistics, Accessed on 18/02/2026.
21. Chaturvedi, S. (2016) *The Logic of Sharing: Indian Approach to South-South Cooperation.* Cambridge University Press, Cambridge, p. 48-70.
22. Saran, S. (2019) *The New World Disorder.* Penguin Random House of India, New Delhi, p. 34-57.
23. World Bank (2023) World Development Report. World Bank, Washington, DC, https://www.worldbank.org, Accessed on 13/02/2026.

****